बेहदि बेपरिवाहु, सामी डि॒ठा संत जन,
रखनि न रतीअ जेतिरी, चित में चिंता चाह,
चढ़िया अनभइ अछ ते, रहति सचीअ जी राह,
जाड़े कनि निगाह, ताड़े सज॒णु सामुहूँ.

वेदांत के अध्ययनकर्ता एवं कवि सामी जी इस श्लोक में संतों की विशेषताओं के संबंध में कहते हैं कि ''मैंने अपने जीवन में संतजनों को अति निश्चिंत, बेफ्रिक, बेपरवाह देखा। ईश्वर को छोड़कर वे अन्य किसी का परवाह नहीं करते। संतों के मन में तिल मात्र भी चिंता नहीं रहती और वे रत्ती-भर भी चाह-कामना-इच्छा नहीं करते। सच्चे संतों को आत्मज्ञान प्राप्त हुआ होता है। वे निर्मल होते हैं और सन्मार्ग पर चलने वाले होते हैं। वे सृष्टि के हर पदार्थ में परमेश्वर को देखते हैं। सच्चे संत जिधर दृष्टि करते हैं, उधर इन्हें प्रियतम परमात्मा ही दिखाई देता है।

संत ईश्वरस्वरूप और ब्रह्मस्वरूप होने के कारण ब्रह्मज्ञानी ही होते हैं। ऐसे ही पूर्ण पद को प्राप्त संतजन संसार में रहते हुए भी निर्लिप्त रहते हैं कमल फूल के समान। 'ब्रह्मज्ञानी सदा निरलेप, जैसे जल में कँवल अलेप।'- (गुरु अर्जुन देव) सच्चे संतों का किसी बात की चिंता और चाह नहीं होती। जिनके अंतर्ज्ञान प्राप्त हो चुका है, जिनके मन में भगवान का निवास है, जो संसार की प्रत्येक वस्तु में परमात्मा की झलक पाते हैं, भला उन्हें किस बात की चिंता या चाह होगी ? उनकी सारी मनोकामनाएँ तो परमेश्वर ने पहले ही पूर्ण कर दी हैं। उनके मन से द्वैत और अन्य विकार नष्ट हो जाने के कारण वे निर्मल और पवित्र हो गये होते हैं। वे जिधर भी नजर डालते हैं, उधर परमेश्वर दिखाई देते हैं।

वस्तुत: संत परमात्म वस्तु अथवा सत् वस्तु से एकरूप हो चुका व्यक्ति होता है। संतों के जीवन का एक प्रमुख उद्देश्य होता है सामान्यजनों का, मनुष्यों का आध्यात्मिक पुनरुज्जीवन करना। वे अपने अनुभव द्वारा लोगों को सयाना, स्वार्थ-रहित और नीतिमान बनाने के लिए नाना प्रकार के प्रयत्न करते रहते हैं। लोगों को भगवान की भक्ति की ओर उन्मुख करना उनका महत् कार्य होता है। स्वयं को प्राप्त आत्मानंद वे सब को प्राप्त करवाने की कामना करने वाले होते हैं। अपने व्यक्तिगत जीवन में सच्चे संत निरिच्छ, नि:स्वार्थी, त्यागी और उदासीन/विरक्त होते हैं।

आशा तजि, माया तजै, मोह तजै अरु मान।
हरष शोक निंदा तजै, कहै कबीर संत जान॥

■